# ॥ श्रीश्रीराधादामोदरौ जयतः ॥

# ॥ हरिपार्षददासविरचितं जन्मदिवसपञ्चकम् ॥

### ( तोटकं वृत्तम् )

सुदिनं सुदिनं तव जन्मदिनं यदुपस्थितमद्य सुचारुतमम् ।
अयि वैष्णव नस्तदतीव हरिप्रणयर्द्धिनिदानमिदं भवतु ॥१॥

## शब्दार्थ

सुदिनम् – सुन्दर दिवस ; सुदिनम् – मङ्गलमय दिवस ; तव – आपका ; जन्मदिनम् – जन्मदिवस ; यत् – जो ; उपस्थितम् – उपस्थित हुआ है ; अद्य – आज ; सुचारुतमम् – सबसे मनोहर ; अयि – हे ; वैष्णव – वैष्णव ; नः – हम सभी की ; तत् – वह ; अतीव – अतिशय ; हरि-प्रणय-ऋद्धि-निदानम् – श्रीकृष्ण की प्रीति की वृद्धि का कारण ; इदम् - यह ; भवतु – हो ।

## भावार्थ

हे वैष्णव ! आपका जो यह सुन्दर, मङ्गलमय, अतिशय मनोहर जन्मदिवस आज यहाँ उपस्थित हुआ है , वह हम सभी की श्रीकृष्णप्रीति की वृद्धि का कारण हो ।

( टिप्पणी :– वैष्णवियों के जन्मदिवस के अवसर पर इस पद्य के तृतीय चरण में “अयि वैष्णव” के स्थान में “अयि वैष्णवि” कहना चाहिए , तथा अनुवाद में “हे वैष्णव” के स्थान में “हे वैष्णवी” होगा । अन्य शब्द समान ही रहेंगे । )

-- o --

गुरुवैष्णवविप्रकुलेष्टसुराः पितरश्च चराचरजीवगणाः ।
मुदिताः सकलाश्च भवन्तु सदा शुभजन्मदिनं सफलं भवतु ॥२॥

## शब्दार्थ

गुरु-वैष्णव-विप्र-कुल-इष्टसुराः – श्रीगुरु, समस्त वैष्णवगण, समस्त विप्रगण तथा कुल के इष्टदेवता ; पितरः – पितृगण ; च – और ; चराचर-जीवगणाः – चराचर जीव ; मुदिताः – प्रसन्न ; सकलाः – समस्त ; च – और ; भवन्तु – हों ; सदा – सदा ; शुभ-जन्म-दिनम् – शुभ जन्मदिवस ; सफलम् – सफल ; भवतु – हो ।

## भावार्थ

श्रीगुरु, समस्त वैष्णवगण, समस्त विप्रगण, कुल के इष्टदेवता, समस्त पितृगण तथा समस्त चराचर जीव सदा प्रसन्न हों । यह शुभ जन्मदिवस सफल हो ।

-- o --

बलि-राम-विभीषण-सात्यवत-हनुमत्-कृपविप्र-मृकण्डुसुताः ।
ददतु स्वकजीवितकाललवं शुभजन्मदिनं सफलं भवतु ॥३॥

## शब्दार्थ

बलि-राम-विभीषण-सात्यवत-हनुमत्-कृपविप्र-मृकण्डुसुताः – बलि महाराज, परशुराम, विभीषण, वेदव्यास, हनुमान, कृपाचार्य नामक विप्र तथा मार्कण्डेय ऋषि ; ददतु – प्रदान करें ; स्वक-जीवित-काल-लवम् – अपनी-अपनी आयु का छोटा अंश ; शुभ-जन्म-दिनम् – शुभ जन्मदिवस ; सफलम् – सफल ; भवतु – हो ।

## भावार्थ

बलि महाराज, परशुराम, विभीषण, वेदव्यास, हनुमान, कृपाचार्य नामक विप्र तथा मार्कण्डेय ऋषि अपनी-अपनी आयु का छोटा अंश प्रदान करें । यह शुभ जन्मदिवस सफल हो ।

टिप्पणी – वैदिक ग्रन्थों में सात मुख्य चिरंजीवियों के नाम दिए गए हैं – बलि , व्यास , हनुमान , विभीषण , कृपाचार्य , परशुराम और अश्वत्थामा । जन्मदिवस पर चिरजीवियों से दीर्घायुष्य की प्रार्थना करने का भाव इस पद्य में है , किन्तु अश्वत्थामा को श्रीकृष्ण नें शाप दिया है अतः कृष्ण के द्वारा शापित व्यक्ति का नाम इस पद्य में नहीं लिया गया है । अश्वत्थामा के स्थान पर मृकण्डुपुत्र श्री मार्कण्डेय ऋषि का नाम यहाँ लिया गया है ।

-- o --

**हरिनामरुचिर्हरिधामरुचिर्हरिकर्मरुचिश्च भवन्तु सदा ।**

**न भवेज्जडजन्म कदापि च नः शुभजन्मदिनं सफलं भवतु ॥४॥**

## शब्दार्थ

हरि-नाम-रुचिः – हरिनाम सम्बन्धी रुचि ; हरि-धाम-रुचिः – हरिधाम सम्बधी रुचि ; हरि-कर्म-रुचिः – हरिकार्य सम्बन्धी रुचि ; च – और ; भवन्तु – हों ; सदा – सदा ; न – नही ; भवेत् – हो ; जडजन्म – भौतिक जन्म ; कदापि – किसी भी समय ; च – और ; नः – हमारा ; शुभ-जन्म-दिनम् – शुभ जन्मदिवस ; सफलम् – सफल ; भवतु – हो ।

## भावार्थ

श्रीकृष्ण के नामों में , श्रीकृष्ण के धामों में तथा श्रीकृष्ण सम्बन्धी समस्त कार्यों में सदा रुचि हो । हमारा कभी पुनः इस संसार में भौतिक जन्म न हो । यह शुभ जन्मदिवस सफल हो ।

-- o --

**अवधूत ! गदाधर ! गौर ! हरे ! वृषभानुसुते ! गिरिराज ! सखे ! ।**
**गुरुवर्ग ! कृपां कुरुताद्य मुदा शुभजन्मदिनं सफलं भवतु ॥५॥**

## शब्दार्थ

अवधूत – हे अवधूत नित्यानन्द ; गदाधर – हे गदाधर ; गौर – हे गौर ; हरे – हे श्रीहरि ; वृषभानुसुते – हे वृषभानुपुत्री राधिके ; गिरिराज – हे गिरिराज ; सखे – हे सखा ; गुरुवर्ग – हे समस्त गुरुवर्ग ; कृपाम् – कृपा ; कुरुत – कीजिये ; अद्य – आज ; मुदा – आनन्दपूर्वक ; शुभ-जन्म-दिनम् – शुभ जन्मदिवस ; सफलम् – सफल ; भवतु – हो ।

## भावार्थ

हे नित्यानन्द ! हे गदाधर ! हे गौर ! हे कृष्ण ! हे वृषभानुपुत्री राधिके ! हे सखा गिरिराज ! हे समस्त गुरुवर्ग ! आज आप सभी आनन्दपूर्वक स्वकृपा प्रदान करें । यह शुभ जन्मदिवस सफल हो ।

-- ॐ तत्सत् --

( निर्माणतिथिः – आषाढ़कृष्णएकादशी , विक्रमाब्द २०७८ )

( ५ जुलाई २०२१ )